केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

अतिरिक्त अभ्यास प्रश्न पत्र – अंक योजना

विषय : हिंदी (कोड-302)

कक्षा : XII | सत्र : 2023-24

अधिकतम अंक :80 अंक

खंड 'अ' वस्तुपरक प्रश्न

प्र.सं.	उत्तर	अंक
1.1	(iii) ईर्ष्या की प्रधानता पर	1
1.2	(ii) कथन A सही है और कारण R कथन A की सही व्याख्या है।	1
1.3	(iii) घृणा के संदर्भ में	1
1.4	(iii) मन आधारित	1
1.5	(i) दूसरों से ईर्ष्या भाव के कारण	1
1.6	(i) कथन – 1 व 2 सही है।	1
1.7	(ii) दूसरे उससे आगे न निकल जाएँ	1
1.8	(iii) अपनी ईर्ष्यावृति को न जान पाने के कारण	1
1.9	(ii) विचारपरक	1
1.10	(iv) अस्वीकार्यता	1
2.1	(iii) हिमाचल से	1
2.2	(i) खुशियों के रंग भर दिए हैं	1
2.3	(iii) वीरता और बलिदान वसंत के रंग और रण का स्वरूप है	1
2.4	(ii) वर्तमान पीढ़ी को अतीत से सीख लेने को प्रेरित करना	1
2.5	(iii) नई पीढ़ी में जोश भरने के लिए	1
3.1	(i) क्या, कौन, कब और कहाँ	1

3.2	(iv) खोजी रिपोर्ट	1
3.3	(i) समाचार-पत्र	1
3.4	(i) नियमित स्तंभ लेखन	1
3.5	(iii) रेडियो, टी. वी. या इंटरनेट की तरह तुरंत घटी घटनाओं को संचालित कर सकते हैं|	1
4.1	(iii) भावों को असीम बताना	1
4.2	(iii) कथन A और कारण R दोनों सही हैं।	1
4.3	(iii) कथन B एवं D सही है	1
4.4	(i) भेदभाव नहीं रखना	1
4.5	(i) भावों एवं शब्दों से खेलने के कारण	1
5.1	(i) नवीनता के परिचायक के रूप में	1
5.2	(iii) कथन A सही है और कारण R सही है , कारण R कथन A की सही व्याख्या है|	1
5.3	(i) पहले के कवियों के आधार पर	1
5.4	(i) परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है	1
5.5	(i) पद के प्रति आसक्ति	1
6.1	(iii) यशोधर बाबू पुराने ख्यालत के हैं|	1
6.2	(ii) प्रभावी व्यक्तित्त्व	1
6.3	(iii) जिम्मेदारी आने पर हर आदमी समझदार हो जाता है।	1
6.4	(iii) जल की उचित व्यवस्था थी|	1
6.5	(iii) कविता में मन नहीं लगना	1
6.6	(iv) यशोधर बाबू के स्वयं का	1
6.7	(iii) वहाँ अनुशासन ज़रूर था, पर ताकत के बल पर नहीं	1
6.8	(iv) अपना अनुभव बताना	1
6.9	(iii) उसे खेती की अपेक्षा पाठशाला जाना	1

अच्छा लगता है।

6.10 (i) यशोधर बाबू अपने मातहतों के साथ हंसी मज़ाक कर लिया करते थे। 1

खंड 'ब' वर्णनात्मक प्रश्न

प्र.सं.	उत्तर	अंक
7	<u>विषयवस्तु</u> (1) विषय केंद्रीयता (अनावश्यक बातें न करके केवल विषय-संबद्ध वर्णन-विवेचन) [2] (2) मौलिकता (सृजनात्मकता के साथ प्रभावपूर्ण भाषा तथा लेखन-शैली का स्वाभाविक रूप से प्रयोग करना) [2] (3) सीमित शब्दों में विषय के सभी पक्षों को संयोजित करना [0.5] (4) शब्द-सीमा का पालन [0.5] <u>भाषाई शुद्धता</u> (1) व्याकरण (व्याकरण सम्मत भाषा तथा विराम चिह्नों का उचित प्रयोग) [0.5] (2) वर्तनी (शब्दों की शुद्ध वर्तनी का प्रयोग) [0.5]	6.0
8.1	(i) (क) कहानी की विस्तृत कथावस्तु का समय/स्थान के अनुसार संक्षेपण,दृश्य और कथानक में संगतता, संवाद संक्षेपण करना, ध्वनि और प्रकाश के मध्य संतुलन,पात्रों के मनोभावों,द्वन्द्वों को दृश्य के माध्यम से दर्शाने में असहजता का अनुभव होना। (i) (ख) रेडियो नाटक मात्र श्रव्य प्रधान एवं ध्वनि प्रभाव और शब्दों में नाटकीय सामंजस्य आवश्यक है। जबकि रंगमंचीय नाटक दृश्य-श्रव्य तथा अभिनेता की भावभंगिमा प्रधान होता है।	2.0
8.2	(ii) (क) भाषा,संवाद,संगीत,ध्वनि, सीमित पात्र संख्या का ध्यान रखना अत्यावश्यक है। (ii) (ख) नए एवं अप्रत्याशित लेखन से लेखक की	2.0

	बौद्धिक,मानसिक,आत्मिक एवं चिंतनीय शक्ति का विकास होता है।	
9.1	(i) समाचार का चरम बिंदु (क्लाइमैक्स) पहले दिया जाता है। तथ्यों एवं सूचनाओं की प्रस्तुति घटते क्रम में दी जाती है। कौन, कब, कैसे, कहाँ, क्यों के विषय में पूर्व सूचना होती है।	3.0
9.2	(ii) पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों का क्षरण, निहित स्वार्थों का पोषण, समाचार पत्रों की बिक्री बढ़ाने हेतु अनुचित साधनों का प्रयोग पीत पत्रकारिता को कमज़ोर करते हैं।	3.0
9.3	(iii) विशेष लेखन हेतु अधिकतम तात्कालिक सूचना संग्रहण, सामान्य विषय और बिंदुओं से अलग लेखन, शैली,भाषा,विषय में विशेषताओं का होना आवश्यक है।	3.0
10.1	(i) चौके का लीपा जाना, सिल पर मसाला पीसा जाना, बच्चों द्वारा स्लेट पर लाल खड़िया का मला जाना ग्राम्य जीवन का यथार्थ चित्रण है।	3.0
10.2	(ii) धन के अभाव में रोजगार न कर पाना, गरीबी,भुखमरी के कारण गलत सही का भेद मिट जाना, भीख तक न मिल पाना, गरीबी के कारण संतानों तक को बेच देना।	3.0
10.3	(iii) चिड़िया की उड़ान का सीमित होना, फूलों के खिलने के साथ मुरझाने की दशा का निश्चित होना, जबकि बच्चों के सपनों का असीमित होना के माध्यम से कवि विशेषताओं को बता रहा है।	3.0
11.1	(i) बादल क्रांति का प्रतीक है। कवि कहता है कि वायु रूपी सागर पर क्रांतिकारी बादलों की सेना इस प्रकार छाई हुई है जैसे क्षणिक सुखों पर दुखों के बादल मंडराते रहते हैं। संसार के दुखी लोगों के लिए अनेक संभावनाएँ उत्पन्न होने लगी हैं।	2.0
11.2	(ii) कारोबारी फायदे के लिए लोगों के दुख-दर्द, यातना वेदना को बेचना चाहता है। कैमरा के सामने लाये गये एक शारीरिक तौर	2.0

	पर असक्षम व्यक्ति से संवेदनहीन व्यवहार करना|	
11.3	(iii)विचार व कल्पना से संसार बनना, बिगड़ना, वैभव के प्रति कोई मोह नहीं	2.0
12.1	(i) भक्तिन और महादेवी का संबंध नौकरानी या स्वामिनी का सबंध न होकर आत्मीय संगिनी का सबंध था। भक्तिन और लेखिका के बीच में सेवक-स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता, जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया, जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे।	3.0
12.2	(ii)भगत जी निर्लोभी और संतोषी हैं। बाज़ार में माल बिछा रहता है परन्तु भगत जी अपनी ज़रूरत की चीजें- काला नमक और जीरा खरीदने के बाद बाजार में कोई रुचि नहीं लेते। आवश्यकता की पूर्ति के बाद बाज़ार उनके लिए महत्त्वहीन हो जाता है। इसी कारण बाज़ार का जादू उन पर नहीं चलता।	3.0
12.3	(iii) अवधूत' वह है जो सांसारिक मोहमाया से ऊपर होता है। वह संन्यासी होता है। लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है क्योंकि वह कठिन परिस्थितियों में भी फलता-फूलता रहता है। भयंकर गरमी, लू, उमस आदि में भी शिरीष का पेड़ फूलों से लदा हुआ मिलता है।	3.0
13.1	(i) लुट्टन के जीवन पर वज्रपात हुआ| वह उन्नति व प्रसिद्धि के शिखर से नीचे गिर गया| बदलते समय में लोक-कला और कलाकार अप्रासंगिक हो जाते हैं। उनका घटता महत्त्व सांस्कृतिक दृष्टि से चिंताजनक है|	2.0
13.2	लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण , विज्ञान इन चुनौतियों का निराकरण नहीं कर पाता तो उत्सवधर्मी भारतीय समाज किसी-न-किसी जुगाड़ में लग जाता है, प्रपंच रचता है और हर कीमत पर जीवित रहने के लिए अशिक्षा तथा बेबसी के भीतर से उपाय और काट की खोज करता है।	2.0
13.3	कुशल व्यक्ति या सक्षम-श्रमिक-समाज का निर्माण करने के लिए	2.0

	यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपना पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके।	
14.1	यशोधर बाबू आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन-मूल्यों और संस्कारों के विरूद्ध हैं। जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती हैं। वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित हैं।	2.0
14.2	मास्टर सौंदलगेकर कुशल अध्यापक, मराठी के ज्ञाता व कवि थे। आनन्दा को कविता या तुकबन्दी लिखने के प्रारम्भिक काल में उन्होंने उसका मार्गदर्शन व सुधार किया, उसका आत्मविश्वास बढ़ाया जिससे वह धीरे-धीरे कविताएँ लिखने में कुशल होकर प्रतिष्ठित कवि बन गया।	2.0
14.3	धर्मतंत्र या राजतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाली वस्तुएँ-महल, उपासना-स्थल आदि-नहीं मिलतीं। यहाँ आम आदमी के काम आने वाली चीजों को सलीके से बनाया गया है। इन सारी चीजों से उसका सौंदर्य-बोध उभरता है। इसी आधार पर कहा जाता है कि सिंधु-सभ्यता का सौंदर्य-बोध समाज-पोषित था।	2.0